होली पर्व की सार्थकता

होली एक अनूठा पर्व है। इस पर्व के पीछे निहित ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी अनूठी होने के साथ-साथ प्रेरणादायक भी है। भक्त प्रह्लाद की ईश्वर के प्रति आस्था कठिन से कठिन संघर्ष पूर्ण परिस्थिति में भी अचल-अडोल रही। एक विश्वास के बल पर उसने राज्य सत्ता के प्रबल विरोध का सामना करके विजय प्राप्त की। मायावी शक्तियां भी उसके सामने पराजित हो गई। यह चमत्कार आज के तर्क प्रधान वैज्ञानिक युग के लिए एक चुनौती है। विश्वास का वैज्ञानिक आधार क्या हो सकता है, क्या विवेक से इसका कोई अंतरसंबंध है? इन सब बातों पर विचार करने की प्रेरणा हमें आज के दिन प्राप्त होती है।

वास्तव में विवेक अथवा वैज्ञानिक बुद्धि अंधविश्वास का खंडन करती है ना कि विश्वास का। ज्ञान जब अनुभव में परिणित हो जाता है तब वह विश्वास के रूप में प्रकट होता है। अतः सच्चा विश्वास विवेक पर आधारित होता है ना कि उसका विरोधी। इसी प्रकार ईश्वर पर सच्चा विश्वास रखने के लिए भी आध्यात्मिक ज्ञान को अनुभव में लाने की आवश्यकता है। अतः सैद्धांतिक दृष्टि से यह पर्व हमें आत्म विश्वास व परमात्म विश्वास के आधार पर कठिन से कठिन परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा देता है।

इस पर्व का दूसरा पहलू इसको मनाने की विधि से सम्बंधित है। ये रस्म-रिवाज कुछ प्रतीक चिन्ह के रूप में देखे जाने चाहिए जो हमें जीवन के व्यवहारिक एवं सैद्धांतिक पक्ष से सम्बंधित महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करते हैं। होली पर्व मुख्यतः तीन भागों में संपन्न किया जाता है। पहला है- जलाना, दूसरा है- मनाना, तीसरा है-मिलना। पहले दिन रात्रि में लकड़ियों की चिता बनाकर होलिका दहन करते हैं, दूसरे दिन प्रातः काल से परस्पर एक दो को रंगों के द्वारा रंगते हैं तथा सांयकाल परस्पर तिलक लगाकर गले मिलते हैं। इस दिन प्रायः लोग नशे का सेवन भी करते हैं। वास्तविक अर्थ में होलिका बुराइयों का प्रतीक है, रंग ज्ञान का प्रतीक है, तिलक आत्म-स्मृति का एवं गले मिलना परस्पर स्नेह की भावना का प्रतीक है। अतः इन रस्मों के पीछे निहित आध्यात्मिक भाव यही है कि हम अपने जीवन की बुराइयों को दृढ़ संकल्प की तीली से जलाएं तभी ज्ञान का रंग जीवन में चढ़ सकता है अर्थात् ज्ञानीत्व आत्मा के लक्ष्यों की धारणा हो सकती है। ज्ञानीत्व आत्मा का सबसे मुख्य लक्षण है कि वह स्वयं भी आत्म-स्मृति में रहता है तथा दूसरे को भी आत्मिक दृष्टि से ही देखता है। इसी का प्रतीक स्वरूप एक-दो को तिलक लगाते हैं। आत्मिक दृष्टि में विश्व की समस्त जीवात्माएं एक पिता परमात्मा की संतान होने के कारण परस्पर भाई-भाई का सम्बन्ध रखती हैं। अतः धर्म,

जाति, भाषा आदि के समस्त भेदभाव को भूलकर भाई-चारे की स्नेहमयी भावना की जागृति का प्रतीक है गले मिलना। सर्वश्रेष्ठ परमात्मा की संतान होने का नशा तभी स्थायी रूप से चढ़ सकता है।

अतः सार रूप में यह पर्व हमें बुराइयों को छोड़कर सत्य ज्ञान को जीवन में धारण करने की प्रेरणा देता है। आत्मिक वृत्ति से समस्त भेदभाव का त्याग कर विश्वबंधुत्व की भावना को जागृत रखे तथा आसुरी प्रवृत्तियों पर पिता परमात्मा के एक बल, एक भरोसे के आधार से विजय प्राप्त करें।

होली को उक्त अर्थों में जलाने व मनाने से हम स्वयं भी होली अर्थात् पवित्र बन जाएंगे। अब तक जो हो-ली, सो हो-ली अतः उसे भूलकर अब हम परमात्मा पिता के हो लें यही इस पर्व का महान सन्देश है।

सौजन्य: ब्रह्माकुमारीज्

*****